डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 मार्च 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - सातवां | अंक-ग्यारहवां | मार्च-2010 | मासिक पत्रिका

5

होली का प्रसाद

परम सन्त अजय सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब
(16 पी. एस. आश्रम राजस्थान)

15

मैं-मेरी

(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजय सिंह जी महाराज
(16 पी. एस. आश्रम राजस्थान)

34

गुरु समान नहीं दाता जग में

(कबीर साहब का शब्द)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर –335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया । फोन – 09950 55 66 71 (राजस्थान) व 09871 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन–09928 92 53 04

उप सम्पादिका : नंदिनी

सन्त बानी आश्रम

16 पी.एस. रायसिंहनगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 96 | Website : www.ajaibbani.org

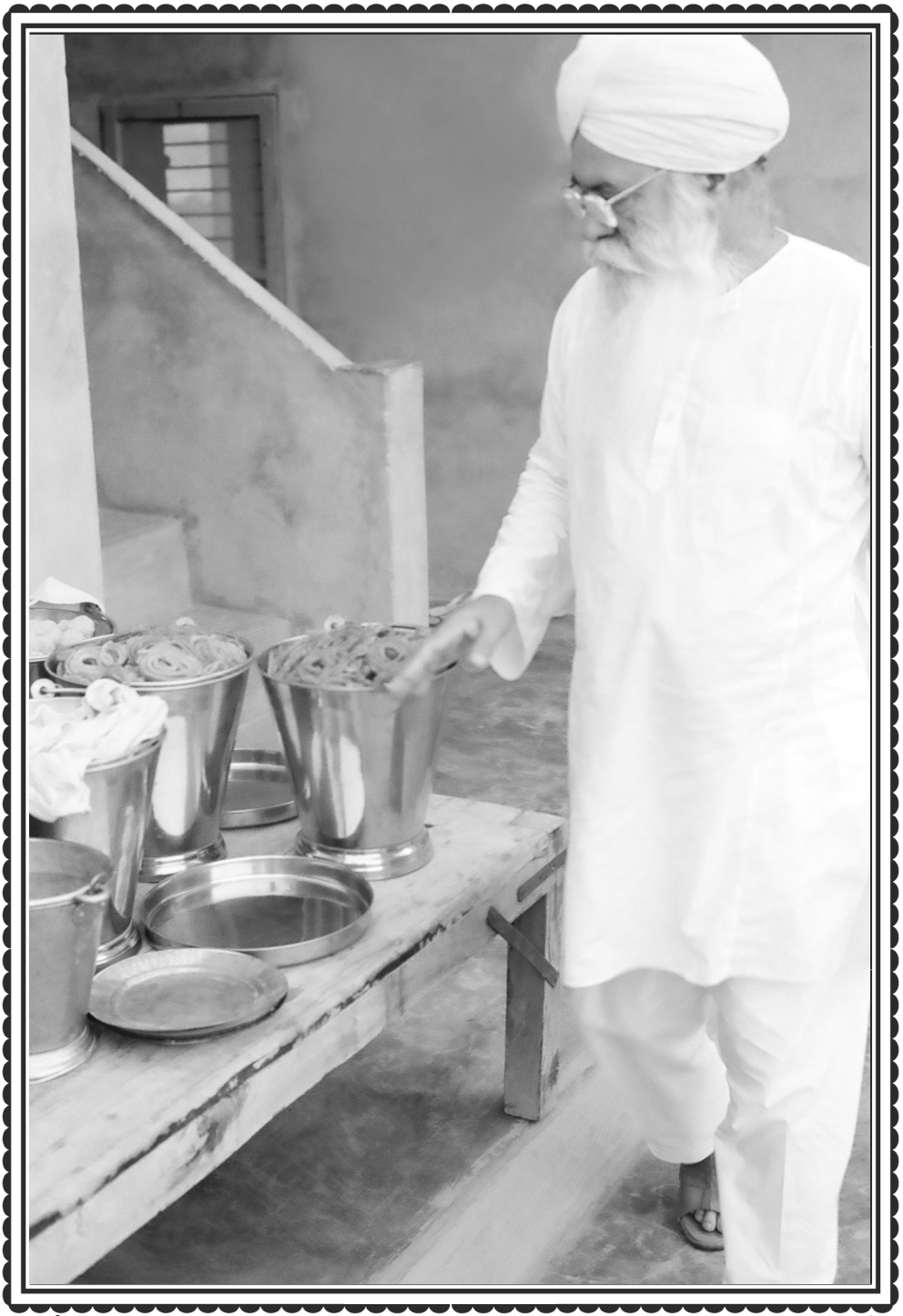

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियो के सवालो के जवाब

होली का प्रसाद

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी : *सेवक किस तरह गुरु को अपना मन दे सकता है?*

बाबा जीः हम मन से कोई भी दुनियावी काम न लें, दुनिया के बारे में न सोचें। जब हमारा मन गुरु के काम में लग जाता है उस समय मन गुरु के ऊपर न्यौछावर हो जाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''औरत पति को तन, धन सब कुछ दे देती है लेकिन मन नहीं देती।'' यही हालत गुरु और शिष्य के बीच में होती है। सेवक अपने मन को गुरु के ऊपर न्यौछावर नहीं करता। मन ही दीवार है, यह मन ही हमारा असली शत्रु है अगर हम मन की रुकावट को दूर कर लेते हैं तो सारा संसार हमारा मित्र बन जाता है फिर हम अपने असली मित्र गुरु से फायदा उठा सकते हैं और आँखो से देख भी सकते हैं कि हमारा गुरु हमारे लिए क्या करता है?

एक प्रेमी : *बाईबल का क्या महत्त्व है?*

बाबा जीः रसल प्रकिन्स ने बाईबल का काफी अध्ययन किया है। उसने बाईबल के बारे में बहुत कुछ विचारा है। इस बारे में आप उससे फायदा उठा सकते हैं।

एक प्रेमी : *ऐसी बहुत सी चीजें जो हमारे काम आती है जैसे पेन, बटन इत्यादि हमें रास्ते में पड़ी मिल जाती हैं। आप हमें बताएंगे कि इस तरह की चीजें इस्तेमाल करने से हमें कितने कर्म उठाने पड़ते हैं?*

बाबा जीः मेरा जातिय तर्जुबा है कि सतसंगी को ऐसी चीजें नहीं उठानी चाहिए चाहे वह कितनी भी कीमती क्यों न हो! क्योंकि जिस आदमी की चीज गिरी होती है वह बहुत उदास होता है। जिसे वह चीज

मिल जाती है वह तो दो मिनट के लिए खुश होता है लेकिन जिसने अपनी कमाई से वह चीज खरीदी होती है सतसंगी को उसका हिसाब जरूर चुकाना पड़ेगा।

यह बड़े सोच-विचार की बात है जिस आदमी को यह आदत पड़ जाती है कि मुझे सड़क पर पड़ी हुई चीज मिली थी वह रोज ही सड़क पर नजर दौड़ाता जाएगा हो सकता है! ऐसी चीज को ढूंढते हुए उसका ऐक्सीडेंट भी हो जाए। कभी-कभी मन ऐसे भी धोखे कर लेता है कि पेन, घड़ियों या और समान की बजाय गन्द आदि में भी हाथ डलवा देता है क्योंकि मन को आदत पड़ चुकी होती है। मन के ऊपर ऐसा शीशा चढ़ जाता है कि वह बुरी चीज पर भी हाथ मार लेता है।

कल होली का दिन है, हिन्दुस्तान में होली का दिन खास महानता रखता है। होली के दिन लोग एक-दूसरे के साथ काफी मजाक करते हैं। पाँच-सात लोग मजाक करने के लिए ऐसी जगह पर बैठ जाते हैं जहाँ से आम लोग गुजरते हैं। वे लोग कील लगाकर लिफाफे को सड़क के साथ चिपका देते हैं जिसमें गंद वगैरहा भरा होता है। जिसे सड़क से सामान उठाने की आदत होती है वह उस लिफाफे को उठाता है तो मजाक करने वाले हँसते हैं और उससे कहते हैं, ''देख भाई! तू तो लूटकर जा रहा है।'' जब वह थोड़ी दूर जाकर उस लिफाफे को खोलता है तब बहुत शर्मिन्दा होता है क्योंकि उस लिफाफे में गन्द होता है। कल के दिन ऐसे बहुत मजाक होंगे।

पुराने समय में अंग्रेज कहा करते थे कि वह कौन सा दिन है जब हिन्दुस्तानी पागल होते हैं। यह वही कल का दिन है। कल के दिन बहुत से लोग कड़वी चीज डालकर हलवा या लड्डू बनाते हैं। उन लड्डुओं के ऊपर चाँदी का वर्क लगाकर किसी खास जगह पर खड़े होकर कहते हैं आओ! मुफ्त में हलवा, लड्डू ले लो। उन लड्डुओं को खाने के लिए बहुत से लोग इकट्ठे हो जाते हैं। वे लड्डू धीरे-धीरे देते हैं क्योंकि उन्होंने तो वहाँ भीड़ इकट्ठी करनी होती है। भीड़ में जेबकतरे भी आ जाते हैं।

जिन लोगों को **होली का प्रसाद** मिल जाता है वे जब उसे मुँह में डालते हैं तो पछताते हैं क्योंकि मुँह कड़वा हो जाता है। जिन्हें यह प्रशाद नहीं मिलता वे पछताते हैं कि हमें तो **होली का प्रसाद** नहीं मिला। इसी तरह जिन बेचारों की जेब कट जाती है वे भी पछताते हैं।

सन्त इस दुनिया को **होली का प्रसाद** कहते हैं। जिसने यह प्रशाद खाया वह पछताया और जिसने यह प्रशाद नहीं खाया वह भी पछताया। जिसने दुनिया भोगी वह भी पछताया और जिसने यह दुनिया नहीं भोगी उसके अंदर भी मन यही ख्याल पैदा करता है कि दुनिया बहुत अच्छी थी तू तो रह गया।

राजा भृतरी राज्य छोड़कर योगी बना। भृतरी ने कई रानियाँ और सुंदर महल छोड़े। एक बार भृतरी सड़क पर चला जा रहा था। सड़क पर किसी की थूक धूप में चमक रही थी। उसने सोचा की सड़क पर लाल पड़ा है। उसने लाल समझकर हाथ मारा तो थूक से उसका हाथ भर गया। उसने अपने मन को धिक्कार मारी कि इतना बड़ा राज्य और सुंदर रानियां छोड़कर तूने यह क्या कियाः

सुंदर मंदिर नारी तजे अर सखियन के साथ।
रे मन धोखे लाल के भरया पीक से हाथ।

मैं तो यही कहूंगा अगर सतसंगी को सड़क पर कोई चीज पड़ी हुई दिखाई देती है तो वह उस चीज को न उठाए, हो सकता है जिसकी वह चीज गुम हुई है वह उसे आकर उठा ले।

***एक प्रेमी** : आपकी दया से मेरी आदतों में तब्दीली आई है। मेरी पत्नी के साथ मेरे सम्बंध काफी बेहतर हो गए हैं। मैं अपनी बीवी से प्यार ही नहीं करता बल्कि मेरे दिल में उसके लिए बहुत श्रद्धा है। ऐसे माहौल में कई बार मेरे दिल में उसके लिए प्यार की भावना पैदा होती है जिसका मैं इजहार करना चाहता हूँ कि मैं उससे प्यार करता हूँ लेकिन मुझे पता नहीं लगता कि मैं किस तरह उसके प्रति अपना प्यार प्रकट करूं? कई बार ऐसा होता है कि वह प्यार की भावना न रहते*

हुए कामवासना बन जाती है। मुझे किस तरह प्यार का इजहार करना चाहिए ताकि प्यार कामवासना न बने?

बाबा जीः यह बहुत सोचने-समझने वाली बात है। माता और बच्चे में, बहन और भाई में कितना प्यार होता है लेकिन उनके ख्याल में काम भावना नहीं होती अगर हम औरत के साथ मित्रता की भावना रखें काम वाले ख्याल को याद ही न करें तो बच सकते हैं। औरत को याद करते ही आदमी में काम भावना जाग जाती है। जब वे एक-दूसरे के नजदीक आते हैं तो बचने का सवाल ही पैदा नहीं होता अगर घी को आग के नजदीक रखें तो वह आग की गर्मी से पिघल जाता है।

औरत और मर्द का सम्बन्ध प्यार का ही है लेकिन हम इसे काम-वासना में लपेट लेते हैं और सारी जिंदगी काम-वासना से छुटकारा नहीं पा सकते। माता बच्चे की जरूरतों को पूरा करती है, जब बच्चा अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है तो माता बेफिक्र हो जाती है। इसी तरह बहन-भाई का सम्बंध है। अगर हम औरत की जरूरतें पूरी करते रहें और औरत मर्द को दुनियावी सहूलियतें देती रहे तो हम काम-वासना से बच सकते हैं।

हम दुनियावी तौर पर एक-दूसरे के काम नहीं आते एक-दूसरे में नुक्ताचीनी करते हैं। अफसोस! चाहे आपस में लड़-झगड़ चुके हों फिर भी भोग भोग लेते हैं। मन के पास काम-वासना में फँसाने के बहुत हथियार हैं। बेचारे जीव को पता भी नहीं लगता मन कब उसे पकड़ लेता है और इस बुरी आदत में फँसा देता है।

कई प्रेमी लोग आकर बताते भी हैं कि वे भाई-बहन की तरह इकट्ठे रहते हैं लेकिन धीरे-धीरे मन उनसे भोग-वासना करवा लेता है। कई माँ-बेटे की शक्ल में रहते हैं लेकिन अंदर उन्हें भी काम में लपेट देता है। कईयों को देखकर शर्म भी महसूस होती है कि वे माता, बहन या बेटी कहते हैं लेकिन अंदर से काम-वासना में लिपटे होते हैं।

कई नए शादी-शुदा जोड़े आते हैं। वे आकर कहते हैं बाबा जी! हम ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करेंगे हमने काम-वासना के लिए शादी नहीं करवाई। मैं चुप करके हँसता हूँ कि ये कितना अहंकार करते हैं। पता नहीं मन कल इनसे क्या करवाएगा लेकिन छह महीने या साल बाद वही जोड़ा मिलता है तो उन्होंने गोदी में बच्चा उठाया होता है या पेट में बच्चा होता है; पेट पर हाथ रखकर कहते हैं कि आप इसे आर्शिवाद दें। जब मैं उन्हें उनका वायदा याद दिलाता हूँ फिर उनके पास कोई जवाब नहीं होता वे मुस्कुराकर चुप हो जाते हैं।

ज्यादा भोग-वासना करके ज्यादा बच्चे पैदा नहीं होते। एक मुसलमान फकीर की कहानी आती है कि उसके पाँच बच्चे थे। उस फकीर का कहना है कि मैं पाँच बार ही अपनी पत्नी के पास गया। आप जानवरों की तरफ देखते हैं कि बहुत से जानवर अपने साथी के साथ एक बार ही भोग करते हैं जब तक बच्चा पैदा नहीं हो जाता और वह बच्चा बड़ा नहीं हो जाता तब तक यह जोड़ा इकट्ठा रहता है। आप सब पढ़े-लिखें हैं आपको ज्ञान होना चाहिए कि बच्चा पैदा करने के लिए जिंदगी में एक बार संजोग होना काफी है; बाकी सब भोग-वासना है।

***एक प्रेमी** : सिमरन करते हुए मेरे दिमाग में कई ख्याल आते हैं जो मुझे परेशान करते हैं। मैं मन की जुबान से सिमरन करने में कामयाब नहीं हूँ क्या कोई तरीका है जिससे मैं गले से ऊपर उठकर मन की जुबान से सिमरन कर सकूं?*

बाबा जी: ख्याल उस समय ही ज्यादा आते हैं जब हम गले से सिमरन करते हैं। हमें इस तरह सिमरन करना चाहिए जिस तरह हमारे अंदर आमतौर से ख्याल चलते हैं। जब हम दुनियावी काम करते हैं तो ख्याल अपने आप ही चलते रहते हैं। मन की जुबान ही ख्याल पैदा करती है, आप उसकी जगह सिमरन को दें।

सतसंगी को सिमरन के समय पूरी तवज्जो देनी चाहिए। आपको थोड़े दिन मुशक्कत करनी पड़ेगी कुछ दिनों बाद आपका सिमरन

ओटोमेटिक ही चल पड़ेगा जिस तरह दुनिया के ख्याल आते हैं फिर याद करें या न करें आपका सिमरन चलता ही रहेगा।

बहुत से सतसंगियों को सिमरन के समय कम ही ख्याल होता है कि सिमरन के क्या फायदे हैं, सिमरन क्यों करना है और सिमरन में क्या शक्ति है? सिमरन के जरिए हम अपनी आत्मा को एकाग्र कर सकते हैं तीसरे तिल पर ला सकते हैं। जब हमें यह ज्ञान हो जाता है कि सिमरन के अंदर शक्ति है फिर सतसंगी पूरी तवज्जो देकर सिमरन करता है और कामयाब हो जाता है।

एक प्रेमी : *अगर हमारा कोई मित्र या रिश्तेदार हमारे घर आकर मीट-शराब की आशा करे तो ऐसे मौके पर हमें क्या करना चाहिए। आप इस बारे में हमें सलाह दें?*

बाबा जीः प्यारेयो! अगर आप भजन-सिमरन करते हैं, आपको गुरु के ऊपर पूरा भरोसा है और आप विश्वास के साथ सन्तमत पर चल रहे हैं तो आपको कुछ समय ही दिक्कत आएगी। उसके बाद आपके यार-दोस्त, रिश्तेदार आपकी इज्जत करने लग जांएगे वे आपके पास आकर इन चीजों की आशा नहीं रखेंगे।

जो प्रेमी 77 आर.बी. आते रहे हैं वे जानते हैं कि अपना खेत गाँव के साथ था और वहाँ से कई गाँवों को रास्ता निकलता था। मैंने अपनी आँखों से देखा और कानों से सुना है कि जो आदमी रात को वहाँ से निकल रहे होते थे अगर उन्होंने शराब पी रखी होती थी तो वे खेत से अलग हो जाते कि सन्तों का खेत आ गया है। हमारा उनके खेत की तरफ से निकलना ठीक नहीं।

आर्मी में भी मेरे अफसरों ने अगर शराब पी होती तो वे मेरे खाने को हाथ नहीं लगाते थे। वे मेरी ड्यूटी उस तरफ नहीं लगाते थे जहाँ लोग शराब पिआ करते थे। कहने का भाव अगर हम मजबूत हों तो सभी हमारी इज्जत करते हैं क्योंकि परमात्मा सबके अंदर बैठा है वह अंदर से ही सिखा देता है कि इसके नजदीक नहीं जाना।

गर्मियों के दिन थे काफी गर्म लू चल रही थी। दिल में ख्याल आया कि रात को दिल्ली चलते हैं आराम रहेगा। हम पी.एस. नहर के पास गाड़ी में पानी डाल रहे थे। उस समय 16 पी.एस. के दो आदमी मोटर साईकिल पर आए उन्होंने पूछा क्या यह बाबा जी की गाड़ी है? उन्होंने मोटर साईकिल पीछे की और कहने लगे कि हमने दर्शन तो करने थे लेकिन अब हम दर्शन करने की हालत में नहीं हैं। आप सोचकर देखें! उन्हें किसने बताया कि शराब पीकर इनके पास नहीं जाना।

हम परमात्मा को छोटा और यारों-दोस्तों को बड़ा समझते हैं। वे तो शायद हमें तंग न करें हम तो ऐसे ही डरते हैं। जब हम खुद ही उनके सामने मीट-शराब लाकर रख देते हैं तो वे खाएंगे ही। हम परमात्मा की भक्ति करते हैं। हमें अपने यारों-दोस्तों को बता देना चाहिए कि हम शाकाहारी जीवन का पालन करते हैं। हम आपके पास आकर मीट-शराब नहीं माँगते और न ही आप हमसे मीट-शराब माँगें।

मैंने तकरीबन शहर से दूर जंगल में ही अपना जीवन बिताया है। जब कभी शहर जाने का मौका मिला, वहाँ के लोगों ने मेरे सामने बिस्कुट और काजू वगैरहा रखे, मैं नहीं खाता था अगर किसी ने मजबूर किया तो मैंने उससे कहा कि मैं तुझे रोटी खिला सकता हूँ। मैंने इसी तरह अपनी जिंदगी बिताई है। कभी किसी ने मेरे घर आकर नुक्ताचीनी नहीं की हमें काजू किशमिश या बिस्कुट खाने के लिए नहीं दिए।

मैंने आर्मी में जाते ही अपने कमांडर को सूचना दी थी कि मैं शुद्ध शाकाहारी हूँ। मैं जितनी देर आर्मी में रहा मेरे लिए राशन, दूध और दूध की बनी हुई कोई चीज अलग से आ जाती थी।

हमें अपने दोस्तों-रिश्तेदारों को प्रेम-प्यार से सूचना दे देनी चाहिए कि हम प्रभु की भक्ति करते हैं शाकाहारी जीवन जी रहे हैं। हम मीट नहीं खाते और न ही खिलाते हैं। मेरा कहने का यह मतलब नहीं कि आप अपने रिश्तेदारो, यारों-दास्तों, भाई-बहनों से न बरतें; उनके आने पर उनकी पूरी खातिरदारी करें।

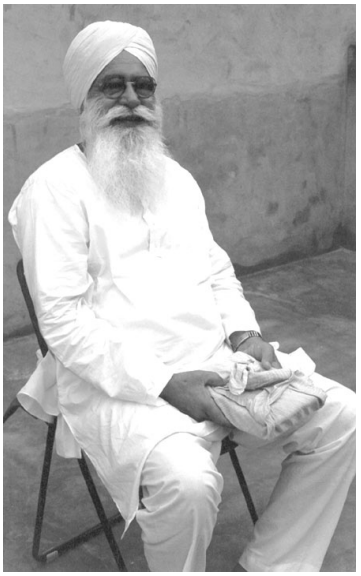

एक प्रेमी : *मैं जब भजनों की किताब पढ़ता हूँ तब मेरा मन मुझे दुनिया की याद दिलाता है?*

बाबा जीः वैसे तो किताब पढ़ते वक्त मन की मदद लेनी पड़ती है। कई बार मन चालाकी मारता है उस वक्त भी दुनिया का ख्याल लाता है आप एक डाक्टर हैं। डाक्टरी का काम करते समय सिमरन काफी मदद कर सकता है अगर हमें मन की जुबान से सिमरन करने की आदत पड़ जाए तो उस समय भी हमारा थोड़ा बहुत सिमरन चलेगा।

एक प्रेमी : *कई बार सिमरन का एक शब्द भी जपना बहुत मुश्किल हो जाता है ऐसा क्यों है?*

बाबा जीः कई बार हम परेशान होते हैं, मन अशांत होता है उस समय सिमरन में स्वाभाविक ही दिक्कत आती है लेकिन जब मन शांत होता है उस समय स्वाभाविक ही सिमरन में लग जाता है।

एक प्रेमी : *कई बार हमें ऐसी संस्था में रहना पड़ता है जहाँ कम बर्तन होते हैं और हमें लोगों के साथ बाँटकर बर्तन इस्तेमाल करने पड़ते हैं। ऐसी हालत में अगर किसी माँसाहारी आदमी के बर्तन इस्तेमाल करने पड़े तो हमें किस तरह के कर्म भुगतने पड़ेंगे?*

बाबा जीः अगर हम बाल की खाल उतारेंगे तो उसमें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा क्योंकि हमें दुनिया में रहना है अगर हम बहुत गहराई में जाते हैं तो हमें अपना जीवन व्यतीत करने में कई कठिनाईयां आती हैं। जब ऐसा मसला हो तो आप अपने बर्तन खुद साफ कर लें।

अब तो हिन्दुस्तान में भी रिवाज है कि लोग विम से अपने बर्तनों को साफ करते हैं। पहले समय में हिन्दुस्तान में ऐसे साधन नहीं थे।

औरतें अगर किसी को बर्तन देती तो पहले उससे साफ करवाती फिर उस बर्तन में गर्म राख डालकर खुद साफ करती।

***एक प्रेमी** : उन आत्माओं का क्या होता है जिन्हें सतगुरु ने 'नाम' दिया होता है?*

बाबा जीः सतगुरु 'नाम' देते हुए कभी गलती नहीं करता। वह जिसे 'नाम' देता है उसे सच्चखंड जरूर पहुँचाता है। गुरु शिष्य को कभी नहीं छोड़ता चाहे शिष्य गुरु को छोड़ जाए। वक्त बताता है कि ऐसे शिष्य अपनी जिंदगी में ही वापिस आ जाते हैं सिर्फ इंतजार की जरूरत होती है। सतगुरु बहुत सब्र वाला और दयालु पुरुष होता है।

मैंने महाराज कृपाल के समय में ऐसे कई वाक्य देखे हैं जिन्होंने कहीं ओर जाकर 'नाम' लिया लेकिन जब उनके साथ कोई समस्या बनी या अंदर से कुछ प्राप्त नहीं हुआ तो उन्होंने आकर महाराज कृपाल से माफी मांगी और फिर उसी रास्ते पर चले।

बहुत से सेवकों को मन बहका देता है। दुनिया को सच्चाई की खोज कम ही होती है। आमतौर पर हम उस जगह जाकर खुश होते हैं जहाँ ज्यादा भीड़ होती है। कई भोले-भाले सतसंगी ज्यादा भीड़ देखकर फँस जाते हैं लेकिन वक्त पाकर उन्हें सच्चाई का ज्ञान हो जाता है तो वे उसी ठिकाने पर वापिस आ जाते हैं जहाँ से पहले गए होते हैं।

***एक प्रेमी** : क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे हम आपकी दया प्राप्त कर सकें?*

बाबा जीः भजन-सिमरन ही दया प्राप्त करने का तरीका है। सतगुरु हमेशा दयालु होता है और वह अपने बच्चों को कुछ न कुछ देकर ही खुश होता है। होली की बात करके दिल बहुत खुश हुआ। बाबा बिशनदास जी आमतौर पर मुझे यह मिसाल देकर समझाया करते थे कि यह दुनिया **होली के प्रसाद** की तरह ही है।

***

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मैं-मेरी

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

मैंने आपको बताया था कि हर रोज कबीर साहब की बानी पर सतसंग होंगे। कबीर साहब ने यह बानी किसी खास विषय पर नहीं बोली। जिस तरह किसी जिज्ञासु ने आकर आपसे सवाल किए आपने उन सवालों के जवाब दिए हैं। सन्त-महात्मा हमें नम्रता का नमूना बनकर दिखाते हैं कि हमारे अंदर नम्रता होनी चाहिए क्योंकि परमात्मा को नम्रता ही प्यारी है।

गुरु नानकदेव जी से पूछा गया महाराज जी! आप कहते हैं कि सब कुछ करने कराने वाला परमात्मा ही है तो फिर जीव को जन्म-मरण में क्यों डाला गया? गुरु नानकदेव जी जवाब देते हुए कहते हैं, ''जब यह जीव '**मैं**' कहता है तो पकड़ा जाता है। उस मुल्क की भाषा '**मैं**' नहीं; वहाँ तू करके ही जाना पड़ता है।''

जब गुरु अर्जुनदेव जी भक्तों की बानी लिखकर गुरु ग्रन्थ साहब को पूरा मान-सत्कार देकर कलमबंद करने लगे तब भाई गुरदास जी ने आपके पास आकर कहा, ''मैंने भी बहुत अच्छी वारें लिखी हैं आप इन्हें भी गुरु ग्रन्थ साहब में दर्ज करें।'' उस समय गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा, ''मामा जी! हम आपका बहुत आदर करते हैं। यह बानी '**मैं**' करने वालों की नहीं, इसमे **मैं-मेरी** का सवाल नहीं।''

लाहौर के कान्हा भक्त के दिल में भी यही ख्याल आया कि बहुत ऊँचा ग्रन्थ लिखा जा रहा है। **मैं** भी इसमें अपनी कोई कविता लिखकर दर्ज करवा दूं तो दुनिया में मशहूर हो जाऊंगा! कान्हा भक्त ने भी गुरु अर्जुनदेव जी के पास आकर कहा, ''आपने इस ग्रन्थ में नाईओ, छिम्बो और जुलाहो की बानी दर्ज की है **मेरी** बानी भी दर्ज करें।'' गुरु अर्जुनदेव

जी ने कहा, ''गुरु ग्रन्थ साहब हमारा आपका नहीं है। जिन्होंने परमात्मा की सिफत में कोई कलाम बोला है जो परमात्मा से मिल चुके हैं उनकी **मैं-मेरी** खत्म हो जाती है।''

सन्त दिलों की बातें जानते हैं। वे अपना आभार प्रकट नहीं करते, न ही अपने आपको अंतर्यामी साबित करते हैं। वे सेवक के मुँह से ही सुनकर खुश होते हैं कि यह क्या कह रहा है? एक जिज्ञासु ने आपके पास आकर सवाल किया, ''क्या तू कबीर है, तेरा ही नाम कबीर है?''

कबीर साहब बहुत ही नम्रता के मालिक थे। आपने कहा प्यारेया! कबीर परमात्मा का नाम है। आप अपने नाम की महानता को समझते थे। मैं तुझे हाँ कह देता हूँ लेकिन कबीर परमात्मा है जो सवाल तू लेकर आया है कि परमात्मा को कैसे पाया जाता है? वह अनमोल 'नाम' **मैं-मेरी** को छोड़कर ही पाया जा सकता है यहाँ तक कि अपने शरीर की आशा भी छोड़ देनी चाहिए कि यह शरीर मेरा है।

कबीरा तुही कबीरु तू तेरो नाउ कबीरु।
राम रतनु तब पाईऐ जउ पहिले तजहि सरीरु।।

कबीर साहब कहते हैं कि कोई आदमी परमात्मा को दोष दे रहा था कि परमात्मा ने मेरा लड़का क्यों मार दिया, परमात्मा ने मुझे धन-पदार्थ क्यों नहीं दिया? मुझे बीमारी दी है बाकी लोग तंदरूस्त हैं। आमतौर पर हम दुनियादार ऐसी ही बातें सोचते हैं कि फलाना आदमी पाप करता है वह सुखी है। **मैं** पुण्य करता हूँ और मैं दुखी हूँ जबकि हमें न पाप का पता है न पुण्य का पता है।

हम बहुत से कर्म पुण्य समझकर करते हैं लेकिन उनकी तह में बहुत बड़ा पाप छिपा होता है अगर बारीकी से देखें तो हमें पता लगता है कि हम जो पैसे पुण्य के लिए देते हैं वह खोटी जगह लग जाते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जिस तरह आज हमने दान की प्रथा चलाई है उस दान से अयोग्य लोग फायदा उठा रहे

हैं। दान देने वालों की मेहरबानी से ही धर्म स्थान लड़ाई-झगड़ों के अड्डे बने हुए हैं। दानी लोगों ने धर्म स्थानों में बहुत सोना लगा दिया है, वहाँ धन-पदार्थ इकट्ठा हो गया है। जहाँ धन आ जाता है वहाँ लोगों में अहंकार भी आ जाता है।''

गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं, ''जिसके ऊपर सोने की छतरी हो नीचे संगमरमर का फर्श हो। जवान उम्र हो मुफ्त में पीने को शराब मिलती हो, अच्छा धन हो फिर परमात्मा ही पाप से बचाए तो बचाए वरना बचने का सवाल ही पैदा नहीं होता।''

कबीर झंखु न झंखीऐ तुमरो कहिओ न होइ।
करम करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइ।।

कबीर साहब उस प्रेमी से कहते हैं तू क्यों झक मार रहा है। तेरे कहने से परमात्मा लोगों का धन तेरे घर नहीं भेज देगा। जो जैसा कर्म करता है वह वैसा ही कर्म भोगने के लिए आता है, उसे कोई मिटा नहीं सकता। आप जो कर्म करते हैं वे कर्म आपको ही भोगने पड़ेगें।

कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ।
राम कसउटी सो सहै जो मरि जीवा होइ।।

आप कहते हैं कि परमात्मा की कसौटी पर झूठे मन वाला, दिखावे वाला कभी कामयाब नहीं हो सकता क्योंकि दिखावे में अहंकार होता है कि **मैं** करता हूँ अगर भक्ति करके हम यह कहते हैं कि हम भक्ति करते हैं तो हम जानते ही हैः

अहंकारया सो मारया।

मैं आपको महाराज सावन-कृपाल की बात बताता हूँ कि आप कुलमालिक होकर भी अपने अंदर इतनी नम्रता रखते थे जो कहने सुनने में नहीं आ सकती। गुरु नानकदेव जी कुलमालिक होकर भी कहते हैं कि हम तेरी शरण में आए हैं। हम तेरे सेवक हैं, तू हमारे ऊपर दया रख।

कहो नानक हम नीच कर्मां शरण पड़े की राखो शरमां।

आप प्यार से कहते हैं कि वहाँ दिखावे वाला नहीं टिक सकता। वही भक्ति कर सकता है, जो गुरु का हुक्म मानता है, दुनिया की तरफ से हाथ धोकर भक्ति को ही मामूल बना लेता है। वह खाना खाना तो छोड़ सकता है लेकिन भक्ति नहीं छोड़ता, अभ्यास नहीं छोड़ता।

कबीर ऊजल पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि।
एकस हरि के नामु बिनु बाधे जमपुरि जांहि।।

जिस समय कबीर साहब काशी में मौजूद थे उस समय वहाँ बड़े-बड़े मठ थे। आज तो ऐसे मठ सारे भारत में फैले हुए हैं लेकिन उस समय मठो का गढ़ काशी ही था। ऐसे धर्म स्थानों की देखभाल करने वाले लोगों को अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनने, कीमती टोपी पहनने, पगड़ी पर मोती लगाने और जिस्म पर हार-श्रंगार लगाने का शौक था। आजकल भी ऐसा आम देखने में आता है।

ऐसे ही एक पुजारी के साथ कबीर साहब की बातचीत हुई। कबीर साहब ने उससे कहा, ''देख प्यारेया! तू बहुत ही साफ सुथरे और सुंदर कपड़े पहनता है। मुँह को साफ रखने के लिए पान-सुपारी भी खाता है ताकि मुँह में से अच्छी खुशबू आए लेकिन तू 'नाम' की कमाई नहीं करता। सच तो यह है कि अभी तेरे साँस बचे होंगे यम पहले ही आ जाएंगे, तुझे बांधकर धर्मराज के सामने पेश करेंगे।''

कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक हजार।
हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार।।

मैं बताया करता हूँ कि परमात्मा सन्तों को कमाल का तजुर्बा देता है क्योंकि बचपन से ही उनकी हर बात तजुर्बेकार होती है। वे माता-पिता, बहन-भाई से तजुर्बा कर लेते हैं। वे आम समाज में भी जाएं तो उनकी हर बात तर्जुबा होती है। वे सतसंग में जो बोलते हैं या जो बानी लिखते हैं यह उनका जातिय तजुर्बा होता है।

महाराज सावन सिंह जी बूढ़ो की हालत बताते थे। आप अपने दादा के बारे में बताया करते थे कि वे मुझ पर गुस्सा होते थे। बाबा जयमल सिंह जी के पास जाकर उनसे भी गुस्सा होते कि हमने लड़का पढ़ाया-लिखाया है इसके पास जो पैसा-टका होता है वह आपके हवाले कर देता है हमारी सार तक नहीं लेता।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि मैंने अपने दादा जी को समझाया कि आपको जितने पैसों की जरूरत है आप उतने पैसे ले लें; आप इतना लालच क्यों करते हैं? दादाजी ने कहा कि मुझे पोता ब्याहने की लालसा है। सन्त-महात्माओं का बताने का मतलब यही होता है कि जिज्ञासु लोग फायदा उठाएं समझें कि हमारी उम्र क्या है?

महाराज कृपाल जब मिलट्री में एकाउंट ऑफिसर थे उस समय आपके नीचे बहुत लोग काम करते थे। आपके परिवार वालों ने आपको रिश्वत लेने के लिए मजबूर किया कि घर का खर्च नहीं चलता आप रिश्वत लें। आपने कहा कि मुझे खर्च के लिए कम पैसे दे दें पर मैं रिश्वत नहीं लूँगा। घरवाले आपको खर्च के लिए कम पैसे देने लगे।

एक बार एक ठेकेदार ने सड़क का काम करवाना था। उस समय चांदी के सिक्के हुआ करते थे। उसने रिश्वत देने के लिए रूपये लाकर महाराज कृपाल की मेज पर रख दिए। महाराज जी ने कहा, ''देख भाई! इस काम के लिए मुझे सरकार तनख्वाह देती है, मैं तेरा काम आसानी से कर दूंगा।'' उस ठेकेदार को लगा शायद रूपये कम हैं उसने कुछ और रूपये मेज पर रख दिए। आपने हाथ मारकर मेज से रूपये नीचे गिरा दिए। आस-पास के जो लोग देख रहे थे उन्होंने कहा कि घर आई माया को ठुकराना अच्छा नहीं आप इन्हें उठा लें।

महाराज जी बताया करते थे, ''एक बार मेरे पास सिर्फ दो रूपये ही बचे थे उस समय तनख्वाह मिलने में अभी एक हफ्ता बाकी था। दिल में ख्याल आया कि किसी से कर्ज ले लेते हैं! आखिर यही फैसला किया कि सुबह गुरु परमात्मा याद नहीं आएगा कर्ज वाला ही याद आएगा।''

आपने ये बात इसलिए बताई कि मेरे सतसंगी बच्चे कर्ज नहीं लेंगे। आप सतसंगियो के लिए एक चानण-मनारा थे। जब पहले दिन मेरे गुरुदेव जी मेरे आश्रम में आए तो मैंने निर्मल सिंह से आपके आगे यह भजन बुलवाया उसमें यही लिखा थाः

जो वस है लालच दे बेचमक सितारा है।

कबीर साहब एक मिसाल देते हैं कि देख प्यारेया! मैं कल गंगा के किनारे घूम रहा था मैंने वहाँ एक नाव देखी जिसकी अच्छी तरह मरम्मत नहीं हुई थी, मल्लाह की भी उसकी तरफ तवज्जो नहीं थी। उस नाव के अंदर हजारो छेद थे उसमें पानी भर गया। एक कमाल की बात देखी जिनके सिर पर वजनदार गठरियां रखी हुई थी वे डूब गए; जिनके पास वजन नहीं था वे तर गए।

इसी तरह इस संसार में हमारा शरीर उस बेड़े की तरह जर्जर हालत में है इसमें विषय-विकारों के हजारों छेद हैं अगर हम इस शरीर की संभाल की तरफ ध्यान नहीं देंगे, जिनके सिर पर पापों का बोझ है वे धर्मराज के दरबार में जाते वक्त उस नदी में डूब जाएंगे जिसका सभी धर्मग्रन्थों में जिक्र है। जिनके सिर पर पापों का बोझ नहीं है वे तर जाएंगे।

कबीर हाड जरे जिउ लाकरी केस जरे जिउ घासु।
इहु जगु जरता देखि कै भइओ कबीरु उदासु।।

काशी में जब भी आस-पड़ोस में किसी की मौत हो जाती तो कबीर साहब उनके साथ चले जाते थे।

मैं जब 77 आर.बी. में रहता था वहाँ की श्मशान भूमि को जाने का रास्ता मेरे दरवाजे के सामने से निकलता था। उस गांव में एक ही परिवार के लोग रहते थे। मेरा सबके साथ अच्छा प्रेम-प्यार रहा है। मैं वहाँ एक परिवार के सदस्य की तरह ही रहा हूँ। शोक के वक्त मैं भी उनके साथ जाया करता था।

जब प्राणी संसार छोड़ जाता है ऐसे वक्त में भी हम लोग श्मशान भूमि पर **मैं-मेरी**, मान-बड़ाई और घर के कारोबार की बातें करते हैं। हमें ऐसा ख्याल नहीं आता कि हम यहाँ से कोई शिक्षा लेकर जाएं कि जाने वाला इस संसार से खाली हाथ चला गया है। आप जिस शरीर का इतना मान करते हैं इसकी हड्डियाँ लकड़ी की तरह और केश घास की तरह जल जाते हैं। मुझे बहुत उदासी है कि सारा संसार ऐसे ही जल रहा है लेकिन फिर भी ये लोग 'शब्द-नाम' की तरफ नहीं आ रहे।

कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड।
हैवर ऊपर छत्र तर ते फुनि धरनि गाड।।

कबीर साहब कहते हैं देखो प्यारेयो! अहंकार न करो। हड्डियों के ऊपर चमड़ी का पोचा है। आप सोचते हैं! मेरा रंग गोरा है मैं ज्यादा सुंदर हूँ लेकिन अंदर तो मैल, बलगम, पस और थूक है। यह शरीर गंदगी का एक थैला है इस शरीर का क्या मान है? कौरव-पांडव जैसे शक्तिशाली बादशाह जिनके बड़े-बड़े छत्र थे वे भी यहाँ से चले गए। लंकापति रावण साथ क्या ले गया?

मेरी मेरी कौरव करते दुर्योधन से भाई।
बारह योजन छत्र झुला था देही गिर्ज न खाई।
सर्व सोने की लंका होती रावण से अधिकाई।

कबीर गरबु न कीजीऐ ऊचा देखि अवासु।
आजु काल्हि भुइ लेटणा ऊपरि जामै घासु।।

कबीर साहब उसी बात को स्पष्ट करते हैं किस बात का अहंकार करते हो! मेरे ऊँचे मकान हैं, मैंने बड़े-बड़े किले बनाए हुए हैं मेरे जैसा कौन है? पता नहीं कब आवाज पड़ जानी है! कब्र में मिट्टी बन जाना है बरसात हो जाती है तो मिट्टी के ऊपर घास पैदा हो जाती है।

कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ।
अजहु सु नाउ समुद्र महि किआ जानउ किआ होइ।।

कबीर साहब उसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि आप अपने से कमजोर पर न हँसे और यह भी अहंकार न करें कि हम धनी हैं। पता नहीं संसार समुद्र से तैरते वक्त क्या होगा? क्या तूने धर्मराज के बारे में नहीं सुना वह तुझसे पाई-पाई का, साँस-साँस का हिसाब लेगा कि तू दुनिया में क्या करके आया है? तुझे इस संसार में किस व्यापार के लिए भेजा था?

लकड़ी कहे लुहार को तू क्या जारे मोह।
इक दिन ऐसा आएगा मैं जारूंगी तोह।।

कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग।
आजु काल्हि तजि जाहुगे जिउ कांचुरी भुयंग।।

आप कहते हैं कि तन का भी मान न करें कि मैं बहुत ताकतवर हूँ रूस्तम जैसे पहलवान इस संसार में आए वे भी चले गए। इसी तरह सबने इस संसार को छोड़ देना है। आमतौर पर जो लोग जमीन का काम करते हैं उन्हें झाड़ियों में साँप की कैंचुली वगैरहा मिल जाती है। साँप कैंचुली को उतारते समय महीने, दिन, घंटे नहीं लगाता कुछ ही देर में कैंचुली उतारकर चला जाता है। हमारी भी यही हालत है पता नहीं सांस की गतिविधि कब रूक जानी है!

मैं आमतौर पर बताया करता हूँ कि जब डाक्टर को मौत के कारण का पता नहीं चलता तो वह कहता है कि हार्ट फेल हो गया है अगर साँस की गतिविधि सही चलती रहे तो किस तरह मौत हो सकती है। हम कहते हैं वैसे तो ठीक-ठाक था परन्तु इसका हार्ट फेल हो गया। प्यारेयो! आप ऐसे कहें कि इस संसार में उसका जीवन इतना ही था।

कबीर लूटना है त लूटि लै राम नाम है लूटि।
फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिंगे छूटि।।

जब कबीर साहब काशी में थे तब वहाँ कोई झगड़ा हुआ, लोग एक-दूसरे को लूट रहे थे। दिल्ली में सन् 1984 में दंगे हुए जिसे कई

लोगों ने देखा है। कई लोगों ने सन् 1947 का वक्त भी देखा है कि उस समय किस तरह लोग एक-दूसरे को लूट रहे थे, मार रहे थे। ऐसी ही हालत काशी में भी हुई थी। उस समय किसी ने कबीर साहब के पास आकर कहा कि आप भी हाथ रंग लें क्योंकि ऐसी लूटपाट को लोग हाथ रंगना ही कहते हैं।

कबीर साहब उस आदमी से कहते हैं कि लूटने वाली चीज तो रामनाम है। जब तन के अंदर यह बोलने वाली जीव आत्मा नहीं रहेगी फिर पछताऐगा। जिनको लूटा जा रहा है वे भी चले गए तो हम क्या आस लगाए बैठे हैं कि यह सामान हमारे साथ जाऐगा?

कबीर ऐसा कोई न जनमिओ अपने घर लावै आगि।
पांचउ लरिका जारि कै रहै राम लिव लागि।।

महाराज सावन सिंह जी सतसंगो में इस तुक का जिक्र करते हुए कहा करते थे, ''मेरी जिंदगी का काफी हिस्सा इस तुक के आसपास घूमता रहा है कि किस तरह पाँच लड़को को मारकर परमात्मा के साथ लिव लगानी है। मैंने हजारों भोग डालने वाले भाईयों से भी इस तुक का अर्थ पूछा तो वे खामोश हो गए तसल्ली नहीं करा सके।''

कबीर साहब कहते हैं, ''ये पांचों लड़के - *काम, क्रोध, लोभ, मोह* और *अहंकार* हैं। जब हम अपने फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आंखो के पीछे लाते हैं आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों परदें उतार लेते हैं। इन पाँचो डाकुओं के रहने का पक्का स्थान हमारी आंखों के पीछे स्थूल गाँठ है। त्रिकुटी में सूक्ष्म है। जब हम इनसे ऊपर पारब्रह्म में चले जाते हैं वहाँ इनका नामोंनिशान नहीं।

जब हम थोड़ा सा अंदर टिकना शुरू करते हैं तो ये पाँचो हमारे अंदर से निकल जाते हैं। *काम* कहता है कि अब यह मेरे रहने का बसेरा नहीं तू मुझसे काम नहीं लेता तो **मैं** यहाँ कैसे रहूँ? यही हालत *क्रोध, लोभ, मोह* और *अहंकार* की है। आप कहते हैंः

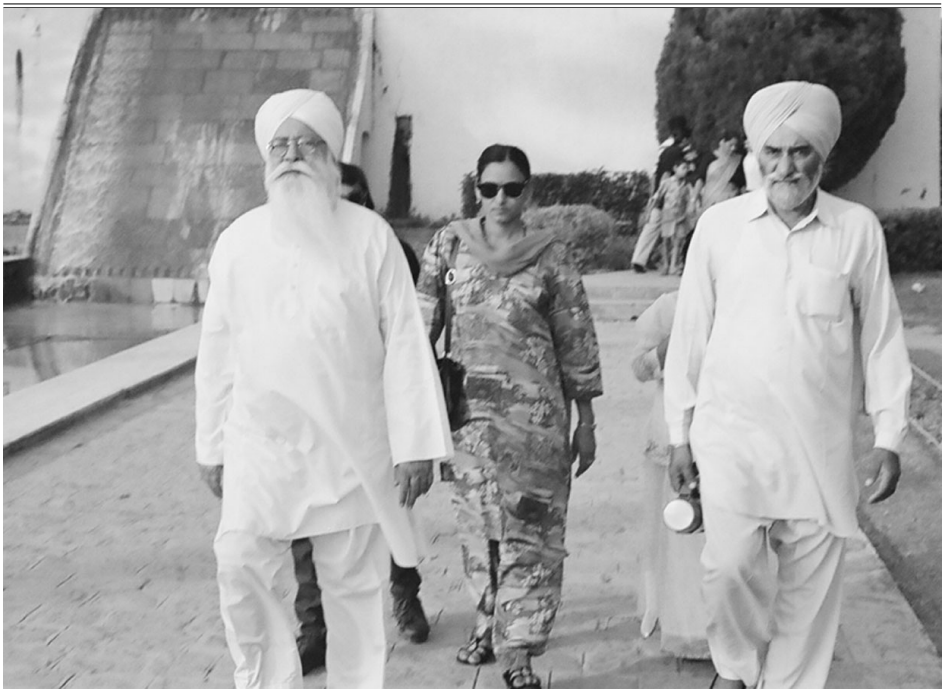

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।

करोड़ो में कोई एक ही जीते जी इन पाँचों लड़को को अपने अंदर से निकाल पाया है और जीते जी इनके घर को आग लगाता है। घर को आग लगाने का मतलब है कि जब हम गुरु के शब्द का तमाचा अंदर रखते हैं तो इनके लिए आग जल उठती है। ये आग की तपिश के पास खड़े नहीं हो सकते फिर हमारे अंदर *काम* की जगह शील, *क्रोध* की जगह क्षमा आ जाती है। काल की ताकतें अंदर से निकल जाती हैं और दयाल की ताकतें अंदर आकर टिक जाती हैं।

को है लरिका बेचई लरिकी बेचै कोई।
साझा करै कबीर सिउ हरि संगि बनजु करेइ।।

कबीर साहब सतसंग कर रहे थे आपके दिल में दया उठी, सन्तों के दिल में भरपूर दया होती है। सन्त खुले दिल से दया बाँटते हैं। आपने कहा, ''संगत में कोई ऐसा है जो अपना लड़का बेचे! लड़की

बेचे! लड़का मन है और लड़की अक्ल है। अक्ल ही हमें मालिक से दूर रखती है। कोई ऐसा है जो मुझे अपना मन और अक्ल दे दे! मैं उसे नाम रूपी शब्द रत्न दे दूंगा; वह हरि के साथ मिलाप कर सकता है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जहाँ मन-बुद्धि खत्म हो जाते हैं वहाँ से रूहानियत की अलिफ-बे शुरू होती है। ये पढ़ने-पढ़ाने का नहीं करनी का मजबून है।''

कबीर इह चेतावनी मत सहसा रहि जाइ।
पाछै भोग जु भोगवे तिनको गुडु ले खाहि।।

आमतौर पर दुनियादार मालिक के प्यारों को ताने-मेहणे मारते हैं। कबीर साहब को किसी ने ताना मारा कि देख! तूने शादी का कोई सुख नहीं लिया न कभी अच्छा खाना ही खाया है। कबीर साहब ने सारी जिंदगी बिना नमक की खिचड़ी का आहार किया था।

मैं बताया करता हूँ कि बाबा बिशनदास जी ने तंदरूस्त होते हुए भी सारी जिंदगी मीठा और नमक नहीं खाया था। मालिक के प्यारे स्वादु नहीं होते उनके लिए एक ही स्वाद होता है वह है - शब्द-नाम।

उस प्रेमी ने कबीर साहब से कहा, ''**मैं** रोजाना भोग भोगता हूँ सुख प्राप्त करता हूँ, मुझे पत्नी और बच्चों का सुख है।'' बेशक पत्नी और बच्चे रोज बुरा व्यवहार करते हों। हम जानते ही हैं कि घरों में कितना प्यार होता है! हम बाहर इन बातों की खूब ठाठ बनाते हैं।

कबीर साहब उससे कहते हैं, ''तू जो कहता है मैं मान लेता हूँ लेकिन इस जिंदगी से पहले तुमने जो भोग भोगे हैं उनका थोड़ा सा गुड़ लाकर दिखा दे क्योंकि सबसे सस्ता गुड़ ही होता है अगर उन कर्मों का ईनाम थोड़ा सा गुड़ भी नहीं मिलता तो मालिक के दरबार में 'शब्द-नाम' का ईनाम कैसे मिलेगा? परमात्मा तुझे क्या ईनाम देगा?''

कबीर मै जानिओ पड़िबो भलो पड़िबे सिउ भल जोगु।
भगति न छाडउ राम की भावै निंदउ लोगु।।

कबीर साहब के पास तीन आदमी अपना-अपना सवाल लेकर आए। एक पढ़ा-लिखा था। एक अनपढ़ था और एक योगी था। अनपढ़ ने कहा, '' पढ़ना नहीं चाहिए पढ़ने से आदमी का दिल स्याही की तरह काला हो जाता है।'' पढ़े-लिखे ने कहा, ''अनपढ़ पशु जैसा होता है उसे अक्ल नहीं होती वह दुनिया में जीने का तरीका नहीं जानता।'' योगी ने कहा, ''गृहस्थ में क्या रखा है, कारोबार करने का क्या फायदा? योगी बनना अच्छा है लोग चढ़ावा लाते है और हम खा लेते हैं।'' कबीर साहब तीनों को प्यार से समझाते हैं।

मैं जानिओ पड़िबो भलो पड़िबे सिउ भल जोग।
योगी कहे योग फल मीठा और ना दूजा भाई।
भक्ति न छाडउ राम की भावै निंदउ लोगु।

पढ़े-लिखे लोग अहंकार से भरे हुए हैं वे दूसरे लोगों को पशु समझते हैं। जब पढ़ा लिखा ही गलती करे तो अनपढ़ को क्या कहेंगे? योगी भी अहंकार से भरा हुआ था कि **मैं** ही अच्छा हूँ। मैं तुम तीनों से यही कहता हूँ कि आप लोग परमात्मा की भक्ति न छोड़े चाहे लोग आपको अच्छा न कहें। चाहे लोग आपकी निंदा करें! आप अपना रास्ता न छोड़े। कबीर साहब कहते हैंः

भक्त जगत से वैर है चारे युग प्रमाण।

हर युग में ऐसा होता आया है। जैसे धनवानों के पीछे चोर लगे रहते हैं वैसे ही मालिक के भक्तों के पीछे निंदक लगे रहते हैं।

जब मेरे महान गुरु ने मुझे 'नामदान' देने के लिए कहा कि सच्चाई का होका देना है। मैंने अपनी गरीबी अपने गुरु के आगे रखकर कहा, ''महाराज जी! आप समरथ और करण कारण है फिर भी लोगों ने आपकी निंदा की, मैं तो एक गरीब आदमी हूँ। मैं इतना भारी वजन कैसे उठा सकूंगा?'' आपने कहा, ''देख भाई! अगर बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे।'' कबीर साहब भी यही कह रहे हैं अगर लोग निंदा करते हैं तब भी आप परमात्मा की भक्ति न छोड़ें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम जिसकी निंदा करते हैं उसके पाप हमारे खाते में जमा हो जाते हैं; हमारी रूहानियत की जड़ कट जाएगी और हमारे शुभ गुण उसके खाते में जमा हो जाएगें।''

निंदया भली काहू की नाही मनमुख मुग्ध करन।
मुँह काले तिन निंदका नरके घोर पवन।।

अगर हमें यह ज्ञान हो जाए कि निंदा करके हम उसका भार अपने सिर पर उठा रहे हैं और हमारी निंदा की वजह से वह मालिक से मिल रहा है तो हम भूलकर भी निंदा नहीं करेंगे। जिसके अंदर ज्ञान नहीं, विवेक बुद्धि नहीं वही निंदा करता है।

कबीर लोगु कि निंदै बपुड़ा जिह मनि नाही गिआनु।
राम कबीरा रवि रहे अवर तजे सभ काम।।

सन्त-महात्मा तो निंदको से भी प्यार करते हैं उन्हें भी गले लगाते हैं। उनके दिल में निंदक के लिए भी दया होती है। आपकी निंदा उनका रास्ता नहीं रोक सकती। उनकी निंदा करके हम अपने सिर पर पाप की गठरी बांध रहे हैं।

कबीर परदेसी के घाघरे चहुदिसी लागी आगि।
खिंथा जलि कोइला भई तागे आंच न लाग।।

श्मशान भूमि में किसी को जलते हुए देखकर कबीर साहब समझा रहे हैं प्यारेयो! हम तो यह कहते हैं कि यह देश, कौम और घर हमारा है लेकिन जब आँख खुल जाती है तो पता चलता है कि इस संसार में हम परदेसी हैं हमारा अपना यहाँ पर क्या है? हमारी आत्मा का घर सच्चखंड है। हम परदेस में आए हैं यह देश हमारा नहीं है।

शरीर जलाते हैं या मिट्टी में दफनाए जाते हैं। आत्मा अमर है इसे अग्नि का ताप नहीं लगता। इसे तलवार काट नहीं सकती। इसे पानी डुबो नहीं सकता। चारों तरफ आग लगी हुई है हड्डिया जल गई माँस जल गया है लेकिन आत्मा उड़ारी मार गई है।

कबीर खिंथा जलि कोइला भई खापरु फूट मफूट।
जोगी बपुड़ा खेलिओ आसनि रही बिभूति।।

कबीर साहब कहते हैं कि वहाँ एक योगी था जिसके पास काफी धन-पदार्थ था। वह अपने सेवकों से कहता कि फलाना आया था वह इतना धन दे गया है ताकि सुनने वाले को भी समझ आ जाए कि मुझे भी यहाँ कुछ धन देना चाहिए। ऐसे लोगों का पेट माया से नहीं भरता। पता नहीं मौत ने कब गला दबा लेना है! देखने में आया है कि ऐसे लोगों की इकट्ठी की हुई माया नीचे ही दबी रह जाती है। ऐसे लोग जिस मसल्ले पर बैठते हैं माया उस मसल्ले के नीचे दबाकर रखते हैं।

मेरे दो प्रेमी सेवक यहाँ बैठे हैं पहले वे जिस साधु को मानते थे वह अपने आपको त्यागी बताता था। वह मौनी था बोलता नहीं था लेकिन जब कोई उससे मिलने आता तो वह जिस दरी पर बैठता था उसे इशारे से दरी के नीचे माया रखने के लिए कहता था। वह उस माया से भांग इत्यादि का नशा किया करता था। मैंने इन प्रेमियों से सवाल किया कि जब वह खेती या दुकानदारी करके नहीं कमाता तो अपना गुजारा कैसे करता है? इन प्रमियों ने बड़ा दिलचस्प जवाब दिया कि वह माया को हाथ नहीं लगाता क्योंकि वह त्यागी है पर माया को दरी के नीचे रखवा लेता है।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर माया मुँह से न माँगी, हाथ से न पकड़ी किसी चेले के जरिए ले ली या लिखकर माँग ली फिर बीमारी तो वही रही।''

मैं आपको गाँव मांझूवास का एक आँखो देखा किस्सा बताता हूँ। वहाँ डेरे में एक साधु रहता था। उसके साथ मेरा बहुत प्यार था। हम सभी गाँव वाले वहाँ से पानी लेकर आते थे उसे साल भर के लिए अनाज भी देते थे। उसने कहा कि मेरा विचार ब्यास जाने का है अगर आप मुझे किराया दे देवें तो मैं व्यास जा सकता हूँ। मैंने कहा ठीक है मैं दे दूंगा फिर उसने कहा मेरा हरिद्वार जाने का मन भी है। मालिक

की मौज का किसी को क्या इल्म है? मैं उससे बात करके अभी थोड़ी दूर किसी के घर पहुँचा ही था तो किसी आदमी ने आकर बताया कि डेरे वाला साधु तो चल बसा है।

यह जानकर मुझे बहुत अफसोस हुआ। थोड़ी ही देर बाद एक और आदमी ने आकर मुझे बताया कि मेरे पास उस साधु के एक हजार रूपये अमानत के रूप में रखे हुए हैं। सब लोगों ने कहा कि हम ये पैसे उस साधु के क्रियाक्रम में लगा देंगे। साधु का तकिया उठाकर देखा तो उस तकिए के नीचे से बारह सौ रूपये निकले। उसने लोगों से काफी सारा गुड़ भी लाकर रखा हुआ था जो उसने बेचना था। सब गाँव वालों ने इकट्ठे होकर सोचा अगर हम सभी इस साधु का भंडारा करें तो अपने गांव की काफी प्रशंसा होगी।

मैंने गाँव के लोगों से पूछा कि आपके पास इस भंडारे के लिए पैसे इकट्ठे करने का क्या तरीका है? उन लोगों ने कहा हम इस साधु को पीपल के पेड़ के साथ बाँधकर बिठा देते हैं और गाँव में होका दे देते हैं कि अपनी श्रद्धा अनुसार आकर दान दें। उन्होंने साधु के गले में कपड़ा डालकर पालथी लगवाकर पेड़ के साथ बाँध दिया, उसकी थोडी के नीचे लकड़ी लगा दी ताकि यह सीधा बैठा रहे। मेरे दिल में ख्याल आया कि बाबा! तुम गुस्सा मत करना चाहे तुम मर गए हो जब तुम जीवित थे तब भी माँगते थे और मरने के बाद भी ये लोग तुमसे मँगवा रहे हैं कि बाबा तुम माँगो और वाह-वाह हमारी हो।

कबीर साहब जो कुछ भी कह रहे हैं बिल्कुल सच कह रहे हैं। योगी मर गया, माया आसन के नीचे ही पड़ी रह गई। ऐसा ही हाल उस बाबा का था जो उसने माँगा था वहीं पड़ा रह गया। मौत किसी का लिहाज नहीं करती पता नहीं मौत ने कब आ जाना है?

कबीर थोरै जलि माछुली झीवर मेलिओ जालु।
इंह टोघनै न छूटसहि फिरि करि समुंदु सम्हालि।।

कबीर समुंदु न छोडीऐ जउ अति खारो होइ।
पोखरि पोखरि ढूढते भलो न कहिहै कोइ।।

कोई छोटे से तालाब में से मछलियाँ पकड़ रहा था उसे देखकर कबीर साहब यह उदाहरण दे रहे हैं, ''यह शरीर एक छोटा सा तालाब है हमारी आत्मा इसमे रह रही है। काल अपने जाल से आत्मा को पकड़ लेता है यह कहाँ जाकर छिपेगी? इसका कोई ठिकाना है?'' फरीद साहब कहते हैंः

जिंद निमाणी कड्डिए हड्डां कू कड़काए।
साहे लेखे ना चलनी जिंदू को समझाए।

आप कहते हैं अगर आत्मा समझदार होती तो अपना घर समुद्र-सच्चखंड न छोड़ती चाहे वह खारा ही लगता था। यह परमात्मा की भक्ति करके फिर उस समुद्र में चली जाए। पोखर पोखर का मतलब है कि हम कभी किसी देवता के पीछे भागते हैं और कभी किसी के। मेरे देखने में आया है कि जब हमारे सतगुरु महाराज कृपाल चोला छोड़ गए तब कई लोगों ने गुरु ही बदल लिया।

आप सोचकर देखें! ऐसे लोगों को क्या कहेंगे? उनमें से कई मेरे पास आकर रोए भी कि हमसे बहुत बड़ा गुनाह हो गया क्या महाराज जी हमें बख्शेंगे? हमे तो आपकी टेप सुनकर, किताब पढ़कर सच्चाई का पता चला है। कबीर साहब भी यही कहते हैं कि जो लोग जगह-जगह हाथ फैलाए घूमते हैं क्या लोग उन्हें अच्छा कहेंगे?

कबीर निगुसांएं बहि गए थांघी नाही कोइ।
दीन गरीबी आपुनी करते होइ सु होइ।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं कि जिन्हें पूरा गुरु नहीं मिला वे अपने जीवन को कौड़ियों के भाव रोल गए। उन्होंने इंसानी जामें का फायदा नहीं उठाया। गुरु नानकदेव जी ने भी कहा हैः

बलिहारी गुरु आपने देयो हाड़ी सदवार।
जिन मानस ते देवते कीऐ करत न लागी वार।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

तिन जन्म सँवारया आपना जिन गुरु अखी देखिन।

जिन्होंने पूरे गुरु के दर्शन कर लिए उन्होंने अपना जन्म सँवार लिया, बाकी बात तो हमारे भरोसे की और गुरु के दिए हुए 'नाम' को जपने की है।

भाई गुरुदास जी कहते हैं कि गुरु के बिना जीव इस तरह है जैसे हम अच्छा मकान बनवा लें लेकिन उसमें दरवाजा न रखें। वह मालिक के दरबार में शोभा नहीं पाता। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर निगुरा ना मिले पापी मिले हजार।
इक निगुरे की पीठ पर लख पापों का भार।।

चाहे हजार पाप करने वाला मिल जाए लकिन निगुरा न मिले क्योंकि निगुरे के पाप बहुत भारी हैं। निगुरा मालिक के चुनाव में नहीं आया; पूरे गुरु की शरण में नहीं आया। हिन्दु शास्त्रों में लिखा है कि निगुरे के हाथ का पानी भी शराब तुल्य है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जिन हर हृदय नाम ना वसया तिन मात कीजे हर वांझा।
तिन सुन्नी देह फिरे बिन नामें ओए खप खप मोहे कुरांझा।।

जिसके दिल में 'नाम' लेने का नाम जपने का शौक ही पैदा नहीं हुआ उसकी माँ बाँझ ही क्यों न रही? कबीर साहब कहते हैंः

ज्यों निगुरा सिमरन करे दिन में कई एक बार।
वेश्या सति होना चाहे कौन करे प रतार।।

गुरु के बिना चाहे आप जप करें! तप करें! पूजा-पाठ करें! कौन जिम्मेवार है? वेश्या बाजार में अपनी दुकान चलाती है उसके दिल में सति होने की इच्छा है परन्तु वह अपना पति किसे बनाएगी किसके साथ सति होगी? ऐसी ही हालत उस निगुरी आत्मा की है। कबीर साहब

कहते हैं कि गुरु के बिना उसका कोई मालिक नहीं है। परमात्मा इस खजाने का मालिक है दीनता गरीबी जिसे देना चाहे देता है।

कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ।
ओहु नित सुनै हरिनाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ।।

कबीर साहब कहते हैं कि 'शब्द-नाम' जपने वाले की कुतिया भी अच्छी है उसके ऊपर रोज नाम की दृष्टि पड़ती है। वह जुबान से बोल नहीं सकती परन्तु कानों से तो सुनती है। साधु के दरबार में हमेशा ही हरि कथा होती है। साकत को जन्म देने वाली माँ भी अच्छी नहीं।

जननी जने तां भक्त जन या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बाँझ रहे काहे गँवाए नूर।।

कबीर हरना दूबला इहु हरीआरा तालु।
लाख अहेरी एकु जीउ केता बंचउ कालु।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं कि यह जीव एक है और इसे मारने वाले अनेकों शिकारी- *काम, क्रोध, लोभ, मोह* और *अहंकार* इसके पीछे लगे हुए हैं। यह जीव कभी बीमार होता है कभी कमजोर भी होता है लेकिन ये पाँचो डाकू इसकी जान नहीं छोड़ते।

कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु।
बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर।।

किसी आदमी ने अपनी बड़ाई करते हुए कबीर साहब के पास जाकर कहा कि मैंने गंगा के किनारे अपना घर बना लिया है। मैं रोज गंगा के पानी से नहाता हूँ और गंगा का पानी पीता हूँ। **मैं** मुक्त हो जाऊंगा मुझे आपकी तरह रातों को जागकर भक्ति करने की क्या जरूरत है? कबीर साहब कहते है, ''मैं ठोक-बजाकर कहता हूँ चाहे तू जो भी कर ले लेकिन परमात्मा की भक्ति, 'शब्द-नाम' की कमाई के बिना तू मुक्त नहीं हो सकता। भक्ति के बिना तू परमात्मा से नहीं मिल

सकता। किसी भी पानी से मुक्ति नहीं होती पानी सिर्फ हमारे बदन की मैल ही उतारता है। मुक्ति परमात्मा की भक्ति में ही है।''

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु।
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर।।

सन्त-महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि तुम्हारा जानी-दुश्मन मन तुम्हारे अंदर है यही तुम्हे अंदर से गुमराह करता है। इसने बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों की मिट्टी पलीत की है। कबीर साहब उस प्रेमी से कहते हैं, ''मैंने भजन-सिमरन करके अपने मन को इतना पवित्र कर लिया है कि परमात्मा मेरे पीछे-पीछे फिरता है, कबीर कबीर कह रहा है और मुझसे पूछता है कि तुझे किस चीज की जरूरत है?''

मैं बताया करता हूँ कि जब हम गुरु को प्रकट कर लेते हैं। गुरु और परमात्मा दो हस्तियों का नाम नहीं है वह एक ही हस्ती है। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

राम सन्त में भेद कुछ नाहीं।
साध रूप अपना तन धारया।।

परमात्मा ही सन्त का तन धारण करके संसार में आता है। उन्हें जिस वस्तु की जरूरत होती है परमात्मा उसे खुद ही पूरी करता है।

राख लिया संतन का सदका, ढाक लिया मोहे पापी परदा।

सन्तों के पीछे जो भी आता है परमात्मा उनका परदा भी रखता है। आप कहते हैं:

कारज संता दे सतगुरु आप खलोया।

कबीर साहब कहते हैं कि हमें भी भक्ति करनी चाहिए, अपने मन की चालाकियों से बचना चाहिए। यह मन एक चंचल घोड़े की तरह है। इसने हजारों सवारों को मिट्टी में मिला दिया है। हमें अपने मन की बुरी आदतों को बदलने के लिए 'शब्द-नाम' की कमाई करनी है।

गुरु समान नहीं दाता

गुरु समान नहीं दाता जग में, गुरु समान नहीं दाता।। (2)

वस्तु अगोचर दई सतगुरु ने (2), भली बताई बाता जग में
गुरु समान नहीं दाता.....

काम क्रोध कैद कर राखै (2), लोभ को लीनो नाथा जग में
गुरु समान नहीं दाता..... (2)

काल करे सो हाल ही कर ले (2), फिर न मिले ये साथा जग में
गुरु समान नहीं दाता..... (2)

चौरासी में जाए परोगे (2), फिर भुगतो दिन राता जग में
गुरु समान नहीं दाता..... (2)

सुमिर बंदगी कर साहब की (2), काल निवाए माथा जग में
गुरु समान नहीं दाता..... (2)

शब्द पुकार पुकार कहत है (2), करले संतन साथा जग में
गुरु समान नहीं दाता..... (2)

कहत कबीर सुनो ऐ धार्मन (2), मानो वचन हमारा जग में
गुरु समान नहीं दाता..... (2)

परदा खोल मिलो सतगुरु से (2), आयो लोक दयारा जग में
गुरु समान नहीं दाता..... (2)

❁❁❁

धन्य अजायब

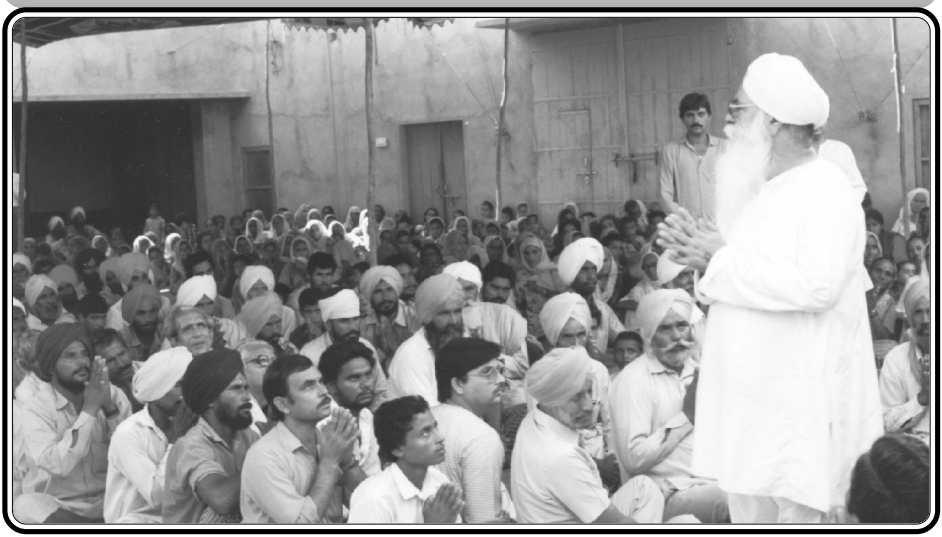

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान में अगले सतसंगों के कार्यक्रम

05 मार्च से 07 मार्च – 2010

31 मार्च से 02 अप्रैल – 2010

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 14, 15 व 16 मई – 2010 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

कम्युनिटी हाल
बेहरा इन्कलेव, पश्चिम विहार
(नजदीक पीरागढ़ी चौक)
नई दिल्ली – 110 087

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें:

राकेश कालिया	सोनू सरदाना	सुरेश चोपड़ा	राकेश शर्मा
98101-94555	98107-94597	98182-01999	98102-12138